अवध के सांस्कृतिक उपादान और नारी–भाव

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र.

प्राचीन भारतीय साहित्य के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति के दो रूप थे–शिष्ट संस्कृति तथा लोक संस्कृति। लोक संस्कृति से हमारा अभिप्राय जन साधारण की उस संस्कृति से है जो अपनी प्रेरणा लोक से प्राप्त करती है जिसकी उत्सभूमि जनता है और जो बौद्धिक विकास के निम्न धरातल पर उपस्थित है। यह लोक संस्कृति शिष्ट संस्कृति की सहायक मानी जाती है। इन दोनों पारस्परिक सहयोग से ही किसी भू–भाग के धार्मिक विश्वासों, कार्यो आदि का ज्ञान संभव है।

सोफिया बर्न के अनुसार लोक संस्कृति के क्षेत्र में वे सभी वस्तुएं आ जाती है जो लोक की मानसिक सम्पन्नता के अन्तर्गत है। लोक संस्कृति वस्तुतः लोक की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति है वह चाहे दर्शन, धर्म और विज्ञान से पैदा हुई हो चाहे तीज, त्यौहारों, पूजा–पाठ, विश्वास व अनुष्ठानों में।

प्रत्येक देश, प्रत्येक प्रान्त तथा प्रत्येक ग्राम एवं नगर की अपनी–अपनी परम्पराएं अपने–अपने रीति–रिवाज तथा अपनी–अपनी पूजा–विधियां होती है। इनमें कुछ न कुछ विशिष्टता एवं विचित्रता होती है। उस देश, प्रान्त तथा ग्राम एवं नगर के निवासियों के क्रिया–कलाप, वेश–भूषा एवं मनोरंजन के साधन संगीत, नृत्य, कथा, कहानी आदि उनके अन्तःकरण की गहनतम अनुभूतियों की झलक देने के साधन होते है। अमुक देशवासियों की मनोधारा किस ओर अग्रसर थी, उनके जीवन की दिशा किस प्रकार के विश्वासों, अनुष्ठानों एवं कल्पों द्वारा निरूपित हुई थी आदि लोक मानस के प्रतिबिम्बित करने वाले तत्व है।

अवध का लोक मानस प्राचीन काल से ही धर्ममय रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है।

अवध की सांस्कृतिक परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने में यहां के मेलों, ठेलों, तीज, त्यौहारों, कथा–वार्ताओं एवं विश्वासों का बड़ा महत्व है। वर्ष भर यहां उत्सवों की झड़ी लगी रहती है। उत्सवों के आभाव में जीवन नीरस–शुष्क और सारहीन सा बनकर रह जाता है। उत्सव हमारे सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण अंश है। इनके सहारे अतीत के आदर्श जीवित हो उठते है।

अवध के ग्रामों में जहॉ देव स्थान होते हैं वहां मेले लगते हैं। मंगलवार को अनेक स्थानों पर महावीर जी का मेला होता है। इन मेलों में आस–पास के ग्रामों के नर–नारी एकत्र होते है। मेलों में आते हुए मार्ग में गीत गाते है। उनके गीतों में क्षेत्रीय देवी–देवताओं, गंगा आदि की प्रशंसा होती है। जिसे लोक मंगल की भावना प्रकट होती है। लोक मंगल भारतीय संस्कृति के मूल में है। यहां के मनीषियों ने यह उद्घोष किया है कि विश्व के समस्त प्राणी सुखी व निरामय रहें। किसी को किसी भी प्रकार का दुःख न हो। ऐसी भावनाओं अन्यत्र नहीं मिल सकती।

स्नान पर्व–स्नान पर्वो की क्रोड़ में हमारी संस्कृति की झॉकी दिखाई देती है। अवध में

गोमती, सरयू आदि नादियो को पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इन नदियों में स्नान करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते है। कुछ स्नान पर्व ये है :– 1. मेष संक्रान्ति चैत्र, 2. वैशाखी पूर्णिमा–वैशाख, 3. कार्तिक पूर्णिमा–कार्तिक, 4. मकर संक्रान्ति–माघ 5. मौनी अमावस्या–माघ। इन अवसरों पर श्रद्धालु नदियों में स्नान करके पुण्य के भागी बनते है।

लोक मानस पर भक्ति की छाप अधिक रहती है। देवी–देवताओं की मनौतियों में लोक जन को विशेष आनन्द आता है। अवध में अनेक लोक देवता भी हैं।

अवध में दुर्गा को देवी के नाम से पुकारा जाता है। देवी का अनुष्ठान अनेक अवसरों पर किया जाता है। इसे विशेष रूप से नारियों द्वारा ही किया जाता है। देवी के प्रसाद की सामग्री भी अत्यन्त सरल होती है। लपसी मिष्ठान से देवी का भोग बनाया जाता है। कपूर से आरती करते है समय प्रशंसा में गीत गाये जाते है। गीत गाते समय नारियों आत्माविभोर हो जाती है।

माता तोरा अच्छा बना है सिवाला।

काहे क ईट लगी है, काहेक लगा है मसाला?

रतन केरी ईट लगी है, लौंगन क लगा है मसाला।

कोउ चढ़ावै ध्वजा नारियल कोउ चढ़ावै माला।

राजा चढ़ावै ध्वजा नारियल और चढ़ावे माला।

नारी धन–धान्य परिपूर्ण होने पर भी देवी जी को नहीं भूलती वरन् उनकी प्रशंसा में गीत गाकर शान्ति का अनुभव करती है। एक गीत में घर मे देवी जी के आगमन पर एक भक्ति बार–बार उनके चरणों का स्पर्श करती है :–

अरी मइया मोरी अँगना माँ आई पइयाँ लागूँ।

कहाँ देख मइया अँगना आई, अरी पइयाँ लागूँ।

दूधा देख मइया अँगना आई, अरी दूधा देख।

पूत देख मुसकानी अरी पइयाँ लागूँ।

अवध में दुर्गा के अतिरिक्त अनेक देवियों की भी मनौतियां की जाती है, जिसमे प्रमुख ये है :–

नारी को आदि शक्ति के रूप में माना जाता है अतः सभी देवियों में मातृत्व की कल्पना मिलती है। उन्हीं माताओं में एक सत्ती माता भी है। इनके पूजन की कोई निश्चित तिथि एवं समय नही है पर सत्ती माता का पूजन विवाह आदि अवसरों पर किया जाता है। इनके पूजन के लिए कोई मंदिर नही होता वरन बाग विशेष में आम को कोई वृक्ष होता है। यहां पर नारियां विवाह के दिन जाकर पूजा करती हैं। पूजन की विशेष सामग्री में बसौढ़ा (बासी पूड़ी) मुख्य होता है। इस अवसर पर गाये जाने वाले गीतों का वर्ण्य विषय सत्ती माता की महता होता है। एक गीत में उनके तेज का वर्णन किया गया है :–

मैं अपने प्रीतम संग जरी।

पहिरे अतलस ओढ़े चुनरी, सेन्दुर माँर भरी।

पहिरे अनवट, बिछिया, पहिरे सहाना, ओढ़े सारी।

बरी मुस्किल ते सत चढ़ा है, रूपचिता बैठी आही आपे ते अगिन निसरी।

ज्वाला मुखी माता का मंदिर सफदरगंज (जिला बाराबंकी) से लगभग 5 किमी की दूरी पर एक बाग में स्थित है। चैत्र की रामनवमी को यहॉ मेला लगता है। भक्त इस दिन यहॉ आकर मूर्ति पर जल चढ़ाकर अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित करते है। प्रसाद में बताशे का भोग लगाते है। ऐसा विश्वास है कि इस नीर को नेत्रों में डालने से माड़ा ठीक हो जाता है।

दरियाबाद (जिला बाराबंकी) में जंगली माता का मंदिर है। इस मंदिर की उत्पत्ति के सम्बन्ध में ऐसी धारणा है कि जहां इस समय मंदिर है। वहॉ पूर्व में जंगल था। जंगल को साफ करते समय एक पत्थर की मूर्ति प्रापत हुई और बाद में वहाँ मंदिर स्थापित कर दिया गया। राम नवमी को नारियॉ यहॉ प्रसाद चढ़ाने आती है। इसके अतिरिक्त शीतला अष्टमी को बसौढ़ा से पूजा करती है। मंदिर में सात अन्य छोटे–छोटे चबूतरे देवी की सात बहनों के प्रतीक स्वरूप पूजे जाते है। जेष्ठ और वैशाख में कन्याएं प्रतिदिन सांयकाल जल चढ़ाती है और नीर लेकर घर के समस्त स्त्री–पुरूष एवं बच्चों के शीश पर छिड़कती हैं। पूजा के समय जो गीय गाये जाते हैं उसमें जंगली माता की महत्ता को व्यक्त किया जाता है। प्रस्तुत गीत इसी भाव को व्यक्त करता है।

जग तारन माय मोर मन ललकै दरसन को।

सुन री भावना कहाँ तुमार जनम भवा, कहवाँ अवतार?

सुन री मलिनिया हींगालाज मोरा जन्म भवा, पाटन अवतार।

सुन री भावना कहाँ तुमार बैठक, कहवाँ जेवनार।

सुनरी मालिनियाँ नीमा तरे मोरा बैठक, मंडप जेवनार।

सुन री मालिनियाँ हनोमान मोरा पायक, भैरव रखवार।

भैरों बाबा के पूजन से टोना–टोटका नहीं लगता। काला कुत्ता इनका वाहन होता है। मंगल अथवा रविवार को इनकी पूजा होती है। इस दिन काले कुत्ते को मिष्ठात्र खिलाने का विधान है। ''भैयादूज'' के दिन नारियॉ कुत्तों को नहीं मारती। वे उनमें भाई के स्वरूप को देखती है।

अवध सें सर्प को देवता के रूप में पूजा जाता है। नागपंचमी के दिन सर्पो को दूध पियाला जाता है। नारियाँ इनकी पूजा गोबर का सर्प और सर्पणी बनाकर करती है। सर्प पूजा के सम्बन्ध में लोक में अनेक धारणाएँ प्रचलित है।

भगवान के अवतारों में एक बराह अवतार भी है। बाराबंकी से उत्तर–पूर्व दिशा की ओर बराह भगवान के मंदिर पर मेला लगता है।

नृसिंह को मारने लिए भगवान ने जिस रूप को धारण किया था वह नृसिंह रूप था। उसे नर और सिंह के नाम से भी पूजते है। हिन्दुओं में यह देवता बहुत ही अनिष्टकारक माने जाते है। ऐसी धारणा है कि जिस घर पर यह रूष्ट हो जाते है और जहां इसका वार्षिक उच्छवास नहीं मिलता वहां उस में भयंकर अनिष्ट होते हैं। प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ–वैसाख मास में इस देवता के नाम से उच्छ्वास लेने वाले गोड़िया आते है उन्हें नर और सिंह का उच्छ्वास दिया जाता है। नृसिंह भगवान के मंदिर कहीं नही मिलते, केवल यह उच्छ्वास निकालकर ही गोड़िया को दे देना लोक में नृसिंह भगवान की पूजा है।

कुँवारे बालक बरूआ अथवा बटुक देवता के रूप में पूजे जाते है। बटुक पूजन के लिए कोई तिथि निश्चित नही होती है। घर में विवाह आदि अवसरों पर इनकी पूजा की जाती है। यज्ञोपवी संस्कार में बरूआ के रूप में पॉच अथवा सात बालकों को दही और भात (उबला हुआ चावल) खिलाया जाता है। इसके अतिरिक्त स्त्रियाँ जब कुँवारी खिलाती हैं तो वे एक लड़का को जिसे ''नेगुला'' कहा जाता है, आमंत्रित करती हैं। यह 'नेगुला' भी वही बटुक या बरूआ है।

अनेक ऐसे साधु–संत हुये है जिन्हें अवध में देवता के समान पूजा जाता है। यद्यपि ये साधु–संत अब जीवित नही हैं फिर भी

व्यक्ति उनकी समाधि को पूजते है। समाधियों की पूजा मुसलमानों में अधिक प्रचलित है। कुछ समाधियों की पूजा हिन्दू–मुसलमान दोनों ही करते है। जैसे कबीर चौरा, जगजीवन दास आदि की समाधि। अवध क्षेत्र में प्रचलित कुछ महात्माओं समाधियों का विवरण इस प्रकार से है :–

'सत्यनामी' धर्म के संचालक बाबा जगजीवन दास थे। बाबा साहब का निवास स्थान कोटवाधाम (जिला बाराबंकी) के अंतर्गत था। बाबा जी के देहावसान के उपरान्त समाधि एक तालाब के किनारे बनवायी गई जहां पर प्रत्येक माह की पूर्णमासी को ''सत्यनामा'' भक्त गुड़धानियाँ का प्रसाद चढ़ाते हैं और अमरन सरोवर में स्नान करते हैं। वर्ष में दो बार बैसाखी और कार्तिकी पूर्णिमा को यहाँ मेला लगता है, जिसमें इस धर्म के मानने वाले दूर–दूर से आते हैं। भक्त लोग एक धारा अनिवार्य रूप से बांधते हैं। धागा काले, सफेद और लाल तागे का बनाया जाता है।

धागे के काले, सफेद और लाल रंग के होने के विषय में यह किंवदन्ती प्रचलित है कि देवा शरीफ के मुसलमान संत वारिश अली, कोटवाधाम के हिन्दू संत बाबा जगजीवन दास तथा ढूलनदास ने हिन्दू–मुसलमान को एकता के सूत्र में बांधने के लिए सत्यनामी धर्म चलाया। वारिश बाबा ने अपनी कमली का काला सूत और जगजीवन बाबा ने अपने अचले का सफेद सूत तथा नानक पंथी संत दूलन दास ने अचला का लाल सूत बँटकर उसे इस धर्म के अनुयायी भक्तों के हाथ में बाँधा था तभी से धर्म के अनुयायी काल, सफेद और लाल रंगों के बने धागों को बाँधने लगे।

फकीर वारिश अली शाह मुसलमान परिवार में पैदा हुए थे। बाबा वारिश अलीशाह देवां में कहीं से आकर एक बाग में अंत समय तक रहते रहे। अपने जीवनकाल में इन्होने अनेक चमत्कार दिखाये जिनसे हिन्दू तथा मुसलमान दोनों प्रभावित हुए। देहावसान के बाद इनकी क्रब इसी बाग में बनवा दी गई जिस पर कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को उनका उर्स मनाया जाता है। इस उर्स में हिन्दू–मुसलमान भक्त समाधि पर आकर चादर चढ़ाते हैं।

बाबा दानाशाह की समाधि दरियबाद की उत्तर दिशा की ओर एक तालाब के मध्य ऊँटे टीले पर बनी हुई है। कहीं से आकर एक फकीर इस टीले पर बसकर अनेक चमत्कार दिखाये जिससे उसकी प्रसिद्ध हो गई। यह फकीर ही दानाशाह कहलाते है।

दानाशाह की समाधि पर रात्रि के समय एक अखण्ड ज्योति जला करती है। कहा जाता है कि इस ज्योति को जलाने कोई नहीं वरन् यह स्वंय जला करती है और किसी सांसारिक व्यक्ति के पास में आते ही बुझ जाती है।

हिन्दू लोग मुसलमानों के पीर–पैगम्बरों को भी श्रद्धा एवं विश्वास से देखते हैं। कहीं–कहीं पर हिन्दू ताजिया भी रखते है। बाराबंकी जिले के देवां मेले तथा बहराइच के सैय्यद सलार के मेले में हिंदू अधिक संख्या में सम्मिलित होते हैं। प्रस्तुत लोकगीत में एक हिन्दू स्त्री अल्ला मियाँ की बारादरी देखने के लिए उत्सुक दिखाई गई है :–

चलौ देखि आई अल्ला कै बारादरी, अल्ला मियॉ का चढ़त है।

नींबू नारंगी, छोहारा, गरी, चलौ देख–आई अल्ला के बारादरी।

वट देवता (बरगद) वृक्ष : अवध में अनेक वृक्षों की भी पूजा की जाती है। ज्येष्ठ की अमावस्या को ''बट सावित्री'' का व्रत होता है। इसे बरसाइत के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। इसके पूजन में सुहागिन स्त्रियाँ भी भाग लेती है। वे निर्जला व्रत धारण करके पति के कल्याण की कामना करती है। इसके पूजन की सामग्रियों में

बाहर कच्चे सूत की माला, बारह बरगद तथा बारह बार इस वृक्ष की परिक्रमा मुख्य होती है। जिस वट वृक्ष की पूजा की जाती है उसे 'बरगद आज तुमार हमरे इहॉ न्योता है' कहकर आमंत्रित किया जाता है।

ऑवला के वृक्ष की पूजा अवध की नारियों के द्वारा की जाती है। इस वृक्ष के नीचे पूजा करने के उपरान्त भोजन किया जाता है, जिससे रोग नष्ट हो जाते है।

आम के पत्ते अनेक मांगलिक अवसरों पर प्रयोग में लाये जाते हैं इसकी लकड़ी से हवन किया जाता है। विवाह के अवसर पर वन्दनवार इसके पत्तों से ही बनाया जाता है।

लोक जीवन में अनेक विश्वास वे तर्कहीन मान्यताएं हैं जिनके द्वारा जीवन में बहुत से निर्णय लिए जाते हैं। इन विश्वासों के स्वरूप निर्धारण के लिए सामान्य जनता में व्यवहृत एवं प्रचलित शकुन–अपशकुनों पर दृष्टि जाती है।

लोक जीवन में अनेक विश्वास तथा मूढ़ाग्रह कार्य करते हैं जिनके सहारे लोक जीवन संतरित रहता है। ये अतर्क्य मान्यताएं जीवन के पथ–प्रदर्शिका बनती हैं। जीवन के आगामी पक्षों का स्पष्ट संकेत इनके द्वारा मिलता है। भविष्य दर्शक के रूप में इनकी महत्ता को आंका जाता है।

भारत में ही नहीं वरन् विश्व के समस्त देशों में अनेकानेक विश्वास पाये जाते हैं। इन विश्वासों में तत्देश के पशु–पक्षी, नर–नारी, प्रकृति के नाना रूप, स्वप्न आदि के व्यवहारों की परख की जाती है। इनकी तालिका इतनी बड़ी होगी कि अनेकानेक पृष्ठों में यह सामग्री समा पायेगी और इसका अध्ययन भी रोचक होगा।

अवध में आज भी अनेक ऐसी मान्यताएं जनता में प्रचलित हैं जिनके लिए कोई वैज्ञानिक व्याख्या नहीं दी सकती, पर ये जनता का मार्ग निर्धारित करती हैं। जिनकी खोज के लिए प्राचीन, मध्यकालीन व आधुनकि साहित्य को देखना पड़ेगा। मध्यकालीन साहित्य के उदाहरण बड़े ही स्पष्ट हैं। प्रसिद्ध सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने ग्रंथ पद्मावत में अनेकों शकुनों का जोगी खंड में संकेत किया है यथा राजा के प्रयाण करते समय जलपूर्ण कलश लिए तरूणियाँ आती हैं और दही लिए हुए ग्वालिनियाँ पुकारने लगती है। मालिनी मौर लिए हुए सम्मुख उपस्थित हो जाती है। खंजन पक्षी नाग के माथे पर बैठा दिखाई देता है। गोस्वामी तुलसी दास के सभी ग्रंथों में लोक प्रचलित विश्वासों का वर्णन आया है। भरत जिस समय अपने ननिहाल से अयोध्या वापस लौटते है उस समय उन्हें विविध प्रकार के अपशकुन होते हैं। यथा कौए जगह–जगह बैठकर बुरी तरह से कॉव–कॉव कर रहे हैं। खर और सियार विपरीत बोल रहे हैं। इससे भरत के मन में बड़ी पीड़ा हो रही है।

अवध में अनेक प्रकार के जन विश्वास भी प्रचलित हैं। इनमें कतिपय विश्वासों का वर्णन इस प्रकार है।

यात्रा के समय दिक् शूल का विचार किया जाता है। यदि दिक् शूल सम्मुख हो तो यात्रा स्थगित कर दी जाती है। सोमवार के दिन पूर्व दिशा की ओर, मंगलवार तथा बुधवार को उत्तर दिशा की ओर, गुरूवार को दक्षिण दिशा की ओर तथा शुक्रवार और शनिवार को पश्चिम दिशा की ओर दिक्शूल मानी गई है। यदि यात्रा करना अनिवार्य ही हो तो रविवार को पान, सोमवार को दर्पण, मंगलवार को धनिया, बुधवार को मिष्ठात्र, बृहस्पतिवार को राई शुक्रवार को दही तथा शनिवार को घृतपान करके यात्रा करना शुभकर होता है।

यात्रा के समय यदि सुहागिन जल से पूरित कलश के साथ मिले अथवा सम्मुख दही, मत्स्य अथवा बछड़े को दूध पिलाती गाय मिले तो शुभ शकुन माना जाता है तथा इसके विपरीत

यदि कुत्ता कान फड़फड़ाये तो यात्रा करना शुभ नहीं माना जाता है।

यात्रा के समय अकेली हिरणी मिले, दो स्यार मिलें। गवाला भैंस पर चढ़कर सामने से आ रहा हो और तेली भी मार्ग में मिल जाये तो यात्रा में अवश्य ही मृत्यु होती है।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि रविवार, मंगलवावर, गुरूवार तथा शनिवार को यदि नाके के बांये छिद्र से वायु निकलती हो तो यात्रा के समय घर में बांये पैर को बाहर रखकर चलना चाहिए तथा इसके विपरीत सोमवार, शुक्रवार एवं बुद्धवार को यदि नाक के दाहिने रंध्र से वायु निकलती है तो यात्रा के समय घर से दाहिने पैरे को बाहर निकालने से यात्रा सफल होती है।

छींक को लेकर अनेक विश्वास प्रचलित हैं। यदि छींक सामने से हो तो लड़ाई होना निश्चित होता है। पीठ पीछे हो तो सुख मिलता है। दाहिनी ओर की छींक से धन का विनाश और बाई ओर की छीक से सम्पत्ति की उपलिब्ध हो ऐसा विचार किया जाता है।

विधवा का दर्शन मांगलिक अवसरों पर अशुभ माना गया है। संयासी तथा सर्प का दर्शन अशुभकर होता है। इसी प्रकार रोगी का दर्शन भी अमंगल सूचक होता है।

अगले बड़े दो दांतों वाला व्यक्ति बुद्धिमान होता है। विरले केश तथा धने दांत वाली नारी को उत्तम प्रकृति का कहा गया है।

स्त्री की पीठ पर मस्सा बहुत अशुभ माना जाता है। ऐसी धारणा है कि जिस स्त्री की पीठ पर मस्सा होता है वह शीघ्र वैधव्य को प्राप्त करती है।

जन्म सम्बन्धी कुछ ऐसे विश्वास मिलते है जिनके आधार पर शुभ–अशुभ तथा लाभ–हानि का अनुमान लगाया जाता है। रविवार का बालक अत्यन्त चंचल, सोमवार का शीलवान, मंगलवार का अति रूपवान, बुद्धवार का धनी, बृहस्पति का गुणी, शुक्रवार का चोर, शनिवार का जन्मा बालक सदैव दुखी रहती है।

खाद्य पदार्थो के सम्बन्ध में भी कुछ जन मान्यताएं अवध में प्रचलित हैं जैसे कुछ महीनों में किसी वस्तु को खाने से वर्जित किया गया है। श्रावण में हरे साग, भाद्रपद में दही, आश्विन में करेला, कार्तिक में दही अगहन में धनियाँ, पौष में अजावइन, माघ में मिश्री, फागुन में चना, चैत्र में गुड़, बैसाख में तेल, जेठ में यात्रा, आषाढ़ में बेल का उपयोग वर्जित किया गया है।

लोककला के द्वारा किसी देश की संस्कृति का आकलन सहज ही किया जा सकता है। नारी करवा चौथ, हरछठ, भैयादूज देवत्थान आदि अवसरों पर अनेक कलाकृतियाँ बनाती है। कोहबर में कमल पुष्प, कमल पत्र, पालकी, घोड़ा, पान का पत्ता आदि चित्रित किये जाते है। कन्या की विदा पर पिता मिष्ठान व पूड़ियां आदि मिट्टी के घड़ों में भरकर भेजताा है उन पर भी अनेक प्रकार के चित्र बनाये जाते हैं उनमें नारी–कला के सुंदर नमूने मिलते हैं। अनेक शुभ अवसरों पर सातियां चिन्ह बनाया जाता है।

अवध में मांगलिक अवसरों पर अल्पना बनाने की प्रथा है। विवाह के अवसर पर वर के स्वागतार्थ पुरोहित कन्या द्वार के सामने गोबर से लिपी भूमि पर आटे से अल्पना बनाता है। तिलक, यज्ञोपवीत आदि अवसरों पर भी विभिन्न आकार–प्रकार की अल्पनायें बनायी जाती है। सत्य नारायण की कथा के अवसर पर भी अल्पना बनायी जाती है। जिसे चौक पूरना कहा जाता है।

विवाह छठी आदि अवसरों पर थापे लगायी जाती है। थापें चावल को पानी में पीसकर अथवा आटे को पानी में घोलकर बनायी जाती है। लड़की के विवाह के पश्चात् चौथी के रूप में मिष्ठान पूर्ण घड़ो पर भी थापें लगायी जाती है।

ग्रामों में गोदवाना सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। गोदना गोदने वाली स्त्री धतूरे के दूध में काजल मिलाकर काला रंग तैयार करती है और उसमें सुइयों को डूबो–डुबोकर भुजाओं पर बाँधती जाती हैं और साथ में गीत भी गाती जाती है :–

गोदना गोदवाय लेव पियारी। गोदनरा गोदवइयों पियारी होई जइयो।

सीता गोदवाइन राम क पियारी भयीं। राधा गोदवाइन किसन क पियारी भयी।

गोदना गोदवाय लेव पियारी। फूल गोदवइयो फूली न समझयो।

पत्ती गोदवइयो हरी–हरी दिखइयो। गोदना गोदवाय लेब पियारी।

ये गोदने विभिन्न आकृति के होते हैं। कोई वर्गाकार तो कोई आयताकार तो कोई त्रिभुजाकार होते है। कहीं–कहीं इनमें पक्षी एवं अन्य प्राकृतिक उपादानों को लोक कला का आधार बनाया जाता है। श्रावण के मनभावना एवं रम्य प्राकृतिक दृश्य नारियों की मेंहदी रचनों के लिए आकृर्षित करते है। ये मेंहदी से अनेक चित्र एवं डिजाइनें अपने हाथ की गदेली और पैरों पर बनाती हैं जो उनकी प्रियता के प्रमाण हैं।

महावर अथव – नारी के सौभाग्य का प्रतीत है। अनेक मांगलिक अवसरों पर महावर लगाने की परम्परा हैं। विवाह के अवसर पर प्रत्येक सौभाग्यकांक्षिणी अपने पैरों में महावर रचाती है। यह पैर के ऊपरी भाग में लगाया जाता है। बीच–बीच में स्वास्तिक चिन्ह भी बना लिया जाता है।

लोक कला को क्षेत्र विशेष में बांधकर सीमित नहीं किया जा सकता। वातावरण और परिस्थितियां अनेक लोक कला कृतियों को जन्म देती हैं जिनसे लोक मानस का सरल एवं निश्छल प्रतिनिधित्व होता है।

संदर्भ सूची

- अवधी लोक गति और परम्परा–प्रो0 इन्दु प्रकाश पाण्डेय
- भारतीय लोक साहित्य–डॉ श्याम परमार
- लोक साहित्य की भूमिका–डॉ0 कृष्ण देव उपाध्याय
- लोक गीतों की सामाजिक व्याख्या–श्रीकृष्ण दास
- ग्राम गीतों में करूण रस–श्रीमती सीतादेवी तथा अन्य
- लोक साहित्य के प्रतिमान–डॉ0 कुंदन लाल उप्रेती
- अवधी लोक कथाएं–सम्पादक–जयप्रकाश भारतीय
- लोक साहित्य–एक निरूपण–श्री राम चन्द्रवोड़ा
- अवध की लोक कथाएं–श्रीशिवमूर्ति सिंह वत्स
- आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी–भावना–सुश्री शैल कुमारी
- अवध के प्रमुख कवि–डॉ0 ब्रज किशोर मिश्र

पत्र–पत्रिकायें

- ✓ राष्ट्रभारती
- ✓ समाज

- ✓ जनपद
- ✓ कल्याण
- ✓ सम्मलेन पत्रिका
- ✓ मरूभारती
- ✓ साप्ताहिक हिन्दुस्तान
- ✓ साहित्य संदेश
- ✓ नमापंथ
- ✓ सप्त सिंधु लोक साहित्य

Copyright © 2015, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.